त्रैमासिक कृषि तकनीकी प्रसार पत्र

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

अंक–63 | अक्टूबर– दिसम्बर 2013 | वर्ष 15

संपादक मंडल

संरक्षक :
डॉ. एस.के. पाटिल
कुलपति
इं. गां. कृ. वि. वि. रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक :
डॉ. जे. एस. उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवायें
इं.गां. कृ. वि. वि. रायपुर (छ.ग.)

उत्प्रेरक :
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना निदेशक
जोन–7, जे. एन. के. वि. वि.
जबलपुर (म.प्र.)

सह उत्प्रेरक :
डॉ. सी. आर. गुप्ता
अधिष्ठाता
कृषि महा. बिलासपुर (छ.ग.)

प्रकाशक :
डॉ. रामनिवास शर्मा
कार्यक्रम समन्वयक
कृ. वि. के. बिलासपुर (छ.ग.)

संपादक :
डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
प्रमुख वैज्ञानिक
कृषि प्रसार शिक्षा, कृ. वि.के.

सहयोगी :
श्री विनोद निर्मलकर
वि.व.वि. पौध रोग
श्रीमती निवेदिता पाठक
कार्यक्रम सहायक, कृ. वि.के.

आँवले के परिरक्षित उत्पाद

आँवला प्रकृति का एक अनमोल उपहार है। आँवला विटामिन "सी" का भण्डार है। आँवले में संतरे की तुलना में 20 गुना विटामिन "सी" होता है। 100 ग्राम आँवले से 58 कैलोरीज मिलती है। बी समूह के विटामिन का अच्छा साधन है।

100 ग्राम आंवले से निम्नलिखित पोषक तत्व प्राप्त होते है–

प्रोटीन : 0.5 ग्राम वसा : 0.1 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट : 13.7 ग्राम, कैल्शियम : 50 मि.ग्राम, फास्फोरस : 20 मि.ग्राम, आयरन : 1.2 मि.ग्राम, विटामिन सी : 600 मि.ग्राम

आँवले का वर्ष भर उपभोग करने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम आंवले को विभिन्न रूप में परिरक्षित कर के रखे जैसे– आँवले का अचार, मुरब्बा, नेक्टर, कैन्डी, जैम,

आँवले का अचार :–

सामग्री :– आँवले – 1 किलो, नमक – 100 ग्राम , हल्दी – 10 ग्राम, मेथीदाना – 05 ग्राम, लाल मिर्च – 10 ग्राम , राई की दाल – 30 ग्राम, काली मिर्च – 05 ग्राम, सरसों का तेल – 300 मि.ली.

विधि :– 1) पके हुए बड़े किस्म के आँवले लेंगे। 2) 5 मिनट उबालकर आँवले की कलियां निकाल लेंगे। (इन्हे साबूत भी रख सकते हैं) 3) नमक मिलाकर तीन दिन धूप में रखेंगे। 4) सारे मसालों को पीसकर इन टुकड़ो में मिला लेंगे। 5) सरसों के तेल को गर्म कर ठण्डा कर लेंगे व आँवले में मिलाकर जार में भर लेंगे ।

आँवले का शर्बत :–

सामग्री :–आँवले का रस – 1 लीटर, शक्कर – 2 किलो , नमक – 20 ग्राम, पोटेशियम मेटा बाई सल्फाइट – 05 ग्राम।

विधि :– 1) बड़े किस्म के कम रेशे वाले आंवले लें। 2) आँवले को तीन दिन तक 2 प्रतिशत नमकके घोल में रखेंगे। 3) आँवले को अच्छी तरह धो लेंगे फिर 15 मिनट तक पानी में उबालेंगे।4) आंवले के बराबर मात्रा में पानी डालकर खूब मसलेंगे जिसमें गुठली अलग हो जाए और रस छान लेंगें। 5) छानने के बाद शक्कर के साथ उबालेंगे। जिससे पूरी शक्कर घुल जाए। अब 10 मिनट उबालेंगे। 6) इस तैयार शर्बत को बॉटल में भरकर सील बंद कर दें।

(डॉ. किरण गुप्ता, श्रीमती निवेदिता पाठक, डॉ. आर. एन. शर्मा)

केन्द्र पर निकरा परियोजना की समीक्षा

नवगंवा (बिल्हा)
गाजर घास उन्मूलन जनजागरण अभियान

खरगहना (तखतपुर) में धान प्रदर्शन का अवलोकन करते वैज्ञानिकगण

किसानों का मितान - कृषि विज्ञान

रबी में सब्जियों की कृषि कार्यमाला

सब्जी	प्रजाति/किस्म	बोने का समय	बीज दर /हे.	कतार/पौधे से दूरी	खाद की मात्रा/हे.				औसत उत्पादन क्विं./हे.
					नत्रजन कि.ग्रा.	स्फुर कि.ग्रा.	पोटाश कि.ग्रा.	गोबर खाद टन	
आलू	अगेती – कुफरी चन्द्रमुखी (75 दिन) कुफरी अशोका कुफरी जवाहर मध्यम – कुफरी सतलज (90 दिन) कुफरी पुखराज कुफरी बादशाह	अक्टूबर – नवम्बर	25–35 क्वि./हे.	60×60 से. मी.	150	80	100	25	अगेती 200–250 मध्यम/ पिछली 300–350
टमाटर	पूसा रूबी, पूसा गौरव, अर्का बहार, अर्का विकास	जून–जुलाई अक्टूबर–नवम्बर	150–500 ग्रा.	60×45 से. मी.	100	50	50	25	250–500
पत्ता गोभी	गोल्डन एकर, प्राइड आफ इंडिया, कोपिनहेगन मार्केट, पूसा मुक्ता	अगस्त–अक्टूबर	500–700 ग्रा.	60×45 से. मी.	50–70	50–120	50–90	15–20	300–450
फूलगोभी	पूसा केतकी, पंत गोभी–3, पूसा शरद, पूसा दीपाली, पंत सुभ्रा	अगेती – मई–जून मध्यम – जुलाई देरी – अगस्त–सितम्बर	500–700 ग्रा.	अगेती–45× 30 से.मी. मध्य/देर – 60×45 से.मी.	50–120	40–50	40–50	30–40	200–300
गांठगोभी	लार्ज ग्रीन, वाइट वेनिया, परपल वेनिया	अगस्त – अक्टूबर	1 कि.ग्रा.	30×30 से. मी.	100	60	100	10–15	200–250
मूली	पूसा चेतकी, पूसा रेश्मी, पंजाब सफेद, पूसा हिमानी, पूसा देशी	अगस्त–सितंबर	10–12 कि.ग्रा.	45×45 से. मी.	50–60	50	50	25–30	150–200
गाजर	पूसा केसर, पूसा मेघाली, पूसा यमदागिनी	सितंबर–नवंबर	5–6 कि. ग्रा.	45×45 से. मी.	50–60	25–50	80–120	25–30	250–300
प्याज	पूसा रेड, पूसा रतनाकर, नासिक रेड, अर्का बिंदू, अर्का कल्यान, अर्का पितांबर, अर्का कीर्तीमान	अक्टूबर–नवंबर	8–10 कि.ग्रा.	20×10 से. मी.	80–100	80–120	80–100	25–30	250–300
लहसून	गोदावरी, श्वेता, पूसा सलेक्सन–10, एग्रीफाउण्ड पार्वती	अक्टूबर–नवंबर	350 से 500 कि.ग्रा अंगुलिकांए	15×10 से. मी.	100–150	40–60	30–80	25–30	40–100
बैंगन	पूसा पर्पल लांग, पूसा पर्पल राउंड, पंत सम्राट, अर्का कुसुमकर, पंत रितुराज	जून–जुलाई सितंबर–अक्टूबर	250–500 ग्रा.	60×60 से. मी.	100	50	50	20–25	450–900

कटाई हेतु उपयोगी कृषि यंत्र

देवेन्द्र उपाध्याय, डॉ.आर.एन.शर्मा

कटाई हेतु कृषि यंत्रों की उपयोगिता -

कृषि के सभी कार्य समय पर किये जाये तो पैदावार अच्छी मिलती है। धान फसल पककर तैयार हो जाने पर उसकी कटाई एक मुख्य क्रिया है। सही समय पर फसल की कटाई करने से दाने की गुणवत्ता एवं उत्पादकता पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और रबी फसल की बुवाई के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।

इंजी. यू.के.ध्रुव,डॉ. डी.के.शर्मा

कटाई का समय -

धान फसल के दाने में 20–22 प्रतिशत नमी उपस्थित रहे और 80 प्रतिशत बालियां तथा तने पीली पड़ जायें तो फसल की कटाई कर लेना चाहिए। ज्यादा देर से कटाई करने पर फसल के गिरने और बालियों से दाना झड़ने का अंदेशा रहता है।

कृषि यंत्र –		यंत्र की क्षमता –
01 दांतेदार उन्नत हसियां	–	0.2 हेक्टेयर/दिन
02 पावर रीपर	–	4–5 एकड़/दिन
03 ट्रेक्टर चलित रीपर	–	01 एकड़/घंटा

केन्द्र पर निकरा परियोजना की जानकारी लेते हुए केडा, हैदराबाद वैज्ञानिक

केन्द्र पर स्थित स्वचलित मौसम वैधशाला का अवलोकन करते हुए केडा, हैदराबाद वैज्ञानिक एवं अधिष्ठाता महोदय

पेण्डरवा (बिल्हा) में केन्द्र के वि.व.वि. द्वारा धान में कीट–व्याधि का अवलोकन

रबी फसलों से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीक

फसल का नाम	बुवाई का उचित समय	बीज की मात्रा कि.ग्रा./हे.	उर्वरक की मात्रा कि.ग्रा./हे.			औसत उपज क्विं./हे.
			नत्रजन	स्फुर	पोटाश	
गेंहूँ : अर्धसिंचित	मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर	100	40	20	10	15–20
गेंहूँ : पूर्ण सिंचित (समय से बुवाई)	5 नवम्बर से 25 नवम्बर तक	100	120	60	30	35–40
गेंहूँ : पूर्ण सिंचित (देर से बुवाई)	25 नवम्बर से 15 दिसम्बर	125–135	80	40	20	35–40
चना	15अक्टूबर–15 नवम्बर	75–100	20	50	20	15–20
मसूर	15अक्टूबर–15 नवम्बर	छोटे दाने 25–30 बड़े दाने 40	असिंचित 15 सिंचित 20	30 40	10 20	10–15
मटर	15अक्टूबर–15 नवम्बर	80–100	असिंचित 22 सिंचित 25	30 60	10 30	55–60
राई–सरसों	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से 15 नवम्बर तक	5–6	असिंचित 60 सिंचित 80	40 40	30 20	20–22
सूरजमुखी	रबी : अक्टूबर–नवम्बर	10–15	असिंचित 40 सिंचित 80	40 60	30 40	10–15
कुसुम	असिंचति : सितम्बर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक सिंचित : मध्य अक्टूबर के बाद	15–20	असिंचित 60 सिंचित 80	30 40	20 40	12–15
गन्ना	अक्टूबर–नवम्बर	1,25,000 आंखें/100 क्विंटल	300	80	60	95–110

श्रीमती शिल्पा कौशिक, डॉ.आर.एन.शर्मा

खरगहना (तखतपुर) में केन्द्र के वि.व.वि. द्वारा धान प्रदर्शन में कीट–व्याधि का अवलोकन

ग्राम स्तर पर ग्रामीण महिलाओं का तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम

बीजोपचार से लाभ एवं रोग प्रबंधन

फसलों में बीजों के द्वारा विभिन्न प्रकार के रोग एक वर्ष से दूसरे वर्ष में तथा एक स्थान से दूसरे स्थान में फैलते हैं। रोगजनक कारक बीजों के सतह पर एवं बीजों के अंदर रहते हैं इसलिए बीज से फैलने वाले रोगों से बचाने के लिए बीजों को उपचारित कर इस्तेमाल करना अत्यंत आवश्यक होता है।

बीजोपचार से लाभ :–

1. अनुपचारित बीज से विभिन्न फफूंद मिट्टी में पहुंच जाती है जिससे बीज का बीजांकुर कम हो जाते हैं। बीजोपचार कर बीज बोने से यह फफूंद नश्ट हो जाती है।
2. उपचारित बीज के चारों ओर फफूंदनाशक दवा की परत से खेत की मिट्टी में पहले से उपस्थित फफूंदों से सुरक्षा होती है।

फसल	रोग	दवा एवं मात्रा
गेंहूँ	कंडुआ, बंट, छिदरा	वीटावेक्स 2–2 .5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज, थाइरम या डाइथेन एम–45 3–3.5 ग्रा./किलो बीज
दलहनी	बीजसड़न, जड़सड़न, कालर सड़न, उकठा	थाइरम 3–3.5 ग्रा./किलो बीज या थाइरम 2 ग्रा.+ बाविस्टिन 1 ग्रा./किलो बीज
अलसी, सूरजमुखी	बीज सड़न, जड़ सड़न, कालर सड़न, उकठा	थाइरम 3–3.5 ग्रा./किलो बीज, बाविस्टिन 1 .5–2 ग्रा./किलो बीज
आलू	कंदसड़न, अंकुर गलन	डाइथेन एम–45 3–3.5 ग्रा./लीटर
गन्ना	लाल सड़न, कंडुआ	डाइथेन एम–45 3–3.5 ग्रा./लीटर
कुसुम, सरसों, सूरजमुखी, मुंगफली	बीज एवं जड़ सड़न	बाविस्टिन 2–3 ग्रा./किलो बीज

विनोद कुमार निर्मलकर, डॉ. आर.एन.शर्मा

उतेरा पद्धति में अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत तकनीकी

धान की फसल के कुल क्षेत्रफल का लगभग 20 प्रतिशत उतेरा फसल पद्धति में आता है। इस पद्धति में अवशेष नमी का उपयोग करते हुए रबी फसल की बुवाई धान की खड़ी फसल में की जाती है। इस पद्धति में अधिक उत्पादन लेने हेतु निम्न सिफारिशें अपनाई जानी चाहिए–

01 धान की उन्नत उत्पादन तकनीक अपनायें। धान फसल में उचित अंतराल में निंदाई करें जिससे उतेरा फसल से अधिक उत्पादन लिया जा सके। 20 प्रतिशत स्फुर उर्वरक की अतिरिक्त मात्रा दे। जिस खेत में उतेरा फसल ली जानी है वहां नील हरित काई नहीं होना चाहिए। खेत का पानी समय–समय पर बदलें। उतेरा फसल की बुवाई के 20–25 दिन के भीतर धान की कटाई करें।

02 तिवड़ा के अतिरिक्त उतेरा फसल के रूप में चना, मसूर, अलसी, सरसों, उर्द, मूंग, को भी लिया जा सकता है।

03 उतेरा फसल हेतु अनुशंसित बीज दर से 25 प्रतिशत बीज दर का प्रयोग करें।

04 बीज को थाइरम या बॉविस्टीन 3 ग्राम एवं दलहनी फसलों को राइजोबियम कल्चर 10 ग्राम प्रति किलों बीज से उपचारित करके बोए।

05 उतेरा फसल की बुवाई अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में या धान फसल में फूल आने के दो सप्ताह बाद करें।

06 उतेरा फसल हेतु 10 कि.ग्रा. नत्रजन/हे. की दर से प्रयोग करें।

07 सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने पर एक सिंचाई अवश्य करें।

08 आवश्यकतानुसार पौध संरक्षण करें।

डॉ. विनम्रता जैन, डॉ. डी.के.शर्मा

सेवारत कर्मचारियों के लिये प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
कृषि अधिकारी	–	–	–	2	4	50
आंगन बाड़ी कार्यकर्त्ता	–	–	–	1	2	20
आंगन बाड़ी सहायिका	–	–	–	1	2	25
कृषक संगवारी (लगभग)	16	16	601	16	16	–
आत्मा (कृषक)	1	1	38	–	–	–
कृषि छात्र	3	3	133	–	–	–

कृषक व ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं के लिये प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
फसल उत्पादन	3	3	42	3	6	60
कृषि विस्तार	2	2	21	3	6	80
गृह विज्ञान	5	6	72	4	8	80
उद्यानिकी	3	3	78	3	6	62
पौध रोग	5	9	98	3	6	58
प्रक्षेत्र दिवस	5	5	175	3	3	–
निकरा जागृति अभियान	4	4	105	4	4	–

प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण

फसल	तीन माह की गतिविधियां	
	परीक्षण	लाभान्वित
1. धान की बुवाई के पूर्व खरपतवारनाशी का प्रयोग का आंकलन	1	4
2. धान में हरी खाद का प्रयोग का आंकलन	1	4
3. धान में नीम लेपित प्रयोग का आंकलन	1	4
4. धान में जीवाणु जनित झुलसा का प्रबंधन एवं आंकलन	1	4
5. सब्जियों की नर्सरी में रोग एवं कीट का प्रबंधन	1	4
6. मिर्च –इंदिरा 1 किस्म में पत्तियों से संबंधित बीमारियों के प्रभाव एवं आंकलन	1	4
7. सेवंती में बुवाई तिथियों का उत्पादन प्रभाव का आंकलन	1	4
8. कुपोषण से बचाव हेतु प्रोटीन की अधिकता वाले आहार का मुल्यांकन	1	4
9. विटामीन 'ए' की कमी की पूर्ति करने हेतु विटामीन 'ए' की अधिकता बाबत्।	1	4

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल	तीन माह की गतिविधियां	
	लाभान्वित कृषक	क्षेत्र/हे.
1. अरहर– राजीव लोचन ICAR	13	5.0
2. तिल– टी.के.जी.–305	13	5.0
3. धान –(श्री पद्धति) कर्मासूरी	13	5.0
4. मशरूम उत्पादन	06	–
5. गृह वाटिका	06	–
6. धान (स्वर्णा) में झुलसा एवं तनाछेदक के प्रबंधन हेतु	15	5.0

समयिक सलाह 2013

अक्टूबर :-

फसलोत्पादन -

- धान की फसल पकते समय खेत से पानी निकाल दें। अगेती फसल के 80 प्रतिशत दाने पीले पड़कर कड़े हो जाये तो कटाई करें। धान की खड़ी फसल में अलसी, तिवड़ा या चना के उतेरा की बोनी करें। अलसी की उतेरा फसल के लिए 10–15 किलो नत्रजन प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त धान की फसल में फूल आने के समय डालना चाहिए।
- अच्छी तरह तैयार खेत में शीतकालीन मक्का, आलू, चना, मटर, मसूर, सरसों व अलसी की बुवाइ बीजोपचार कर संपन्न करें।
- बरानी क्षेत्रों में गेहूँ की (सी 308) की बुवाई उपयुक्त नमी होने पर बीज शोधित कर संपन्न करें।
- असिंचित तोरिया व चने में 20–25 दिन बाद पहली सिंचाई करें। चारा फसलों में बरसीम, लुसर्न एवं जई की बोनी करें। शरदकालीन गन्ने की रोपणी 15 अक्टूबर के बाद प्रारंभ करें।
- धान की फसल में गर्दन झुलसा रोग आगमन की स्थिति में ट्राइसाइक्लाजोल 120 ग्राम दवा को 200 लीटर पानी में घोलकर या टेबुकोनाजोल दवा का 1.5 मि.ली. प्रति लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

उद्यानिकी -

- नये बगीचे में यदि पौधे मर गये हों तो उनकी जगह नये पौधे लगायें।
- बगीचे की फसल में सिंचाई करें। आम, अमरूद, नींबू, कटहल में सिफारिश के अनुसार उर्वरक की शेष मात्रा डालें। पपीता लगाने का कार्य इसी माह पूरा कर लेवें।
- आम में गुच्छा रोग की समस्या है तो एन.ए.ए. नामक हारमोन का 200 मि.ली. /एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- नये बगीचों में अंतवर्तीय फसल के रूप में बरबट्टी, लोबिया, चना, मसूर इत्यादि फसलें लगायें।
- टमाटर, मिर्च, बैगन, गोभी आदि की पौध इस माह के आरंभ में डालें।
- आलू की बुवाई का कार्य इस माह के मध्य से आरंभ करें। बीज शोधन हेतु डायथेन एम–45 दवा का 03 ग्राम/ली. की दर से घोल बनाकर 01 मिनट तक बीज को डुबोयें। बादशाह, कुफरी सिन्दुरी, कफुरी ज्योति इत्यादि जातियों की अनुसंशा छत्तीसगढ़ के लिए की गई है।
- हरी मटर की उन्नत किस्में, पालक, मूली, गाजर, धनिया, मेथी, सौंफ की बुवाई तथा रोपाई करें।
- शीतकालीन पुष्प लगाने का कार्य करें। गमले वाले फूल के पौधे में गुड़ाई कर उर्वरक डालें।

पशुपालन -

- खुरपका–मुंहपका बीमारी से बचाव हेतु दुधारू पशुओं में टीकाकरण करायें एवं 15 दिन बाद उसी पशुओं को पोकनी का भी टीका लगवायें।
- दुधारू पशुओं में थनैला रोग से बचाव हेतु पूरी मात्रा में यथाशीघ्र निकाल दें।
- मुर्गीयों को सामुहिक रूप से दवापान करायें।

नवम्बर :-

फसलोत्पादन -

- धान की देशी एवं जल्दी पकने वाली जातियों की कटाई कर खेत को अगली फसल बोने के लिए तैयार करें।
- मैक्सिकन (सोनालिका आदि) गेहूँ के प्रमाणित बीजों की बुवाई सम्पन्न करें। असिंचित गेहूँ से खरपतवार निकालें तथा 6–8 पत्तियां आनें पर नींदानाशक 2, 4–डी दवा का प्रयोग करें।
- अन्य बोई गई रबी फसलों में निंदाई व सिंचाई करें।
- ज्वार, बाजरा के भुट्टे तोड़ लें तथा बीज के लिए भुट्टे अलग कर लें।
- यदि मूंगफली की खुदाई शेष हो पूर्ण कर लें।
- फसलें काट कर खेत में 1–2 दिन सूखने पर ही बोझा बनाकर खलियान में एकत्रित करें।
- गन्ने की फसल तैयार हो गई हो तो काट कर बाजार भेजें।

उद्यानिकी -

- फल बाग में पौधों के थालों की गुड़ाई एवं निंदाई करें तथा तने पर बोर्डोपेस्ट लगायें।
- आम, लीची, चीकू, आंवला इत्यादि पौधों में मिलिबग को पेड़ के ऊपर चढ़नें से रोकने हेतु ग्रीस की पट्टी लगायें तथा जमीन में 250 ग्राम फालीडाल डस्ट का भुरकाव/पेड़ के हिसाब से करें।
- आम के वृक्ष में इस माह पुष्प कलिका बनना आरंभ होता है अतः सिंचाई बन्द रखें जिससे अधिक से अधिक फूल आयें।
- गर्मी वाली अगेती सब्जियों की रोपणी तैयार करें।
- आलू में माहों से बचाव के लिए फोरेट 10 जी, 4 कि.ग्राम/एकड़ मिट्टी चढ़ाते समय मिलायें तथा झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु बोर्डोमिश्रण 01 प्रतिशत या डाइथेन एम 45 का 0.25 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- मटर में चूर्णी फफूंद की रोकथाम हेतु केराथेन 03 ग्राम/ली. या सल्फेक्स 02 ग्राम/ली. की दर से घोल का छिड़काव करें।
- शीतकालीन सब्जियों की बुवाई पूरी करें। धनिया में पाउडरी मिल्ड्यू से बचाव हेतु सल्फेक्स 02 ग्राम/ली. की दर से छिड़काव करें।
- यदि पिछलें माह गुलाब की कटाई–छटाई पूरी न हो पाई हो तो उसे पूरा करें। पौधें में खाद की निर्धारित मात्रा डालें।

पशुपालन -

- पशुओ को रात में खुले स्थान में नहीं रखें। उनके खाने में एक चम्मच नमक का मिश्रण अवश्य दें।
- सूखे चारें के साथ हरा चारा भी खिलाए।

प्रस्तुत लेखों पर संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ये लेखक के स्वयं के विचार है। – संपादक

दिसम्बर :-

फसलोत्पादन -

- गेहूँ में नत्रजन की शेष मात्रा दें तथा 15–20 दिन के अंतर से सिंचाई करते रहें। बारानी गेहू में यदि वर्षा की संभावना हो तो नत्रजन उर्वरक की मात्रा दें। रोगी पौधों को निकालकर नष्ट कर दें।
- धान व अन्य खरीफ फसलों की कटाई सम्पन्न करें। रबी फसलों की बोनी यदि शेष है तो इस माह में पूरी कर दें।
- बसंतकालीन गन्ने की बुवाई के लिए खेत की जुताई भलीभांति करें।
- लूसर्न व बरसीम चारे की 30–35 के अंतराल पर कटाई कर सिंचाई करे। ध्यान रहे कि चारे की कटाई जमीन से 10 से.मी. छोड़ कर करें। गर्मी में उपयोग हेतु लूसर्न/बरसीम चारें का संरक्षण करें।
- गन्ने की कटाई कर गुड़ बनावे या बाजार में विक्रय करें।
- गेहूँ में नींदा नियंत्रण हेतु 250 ग्राम, 2, 4 डी तथा आइसोप्रोटान 600 ग्राम को 300 से 500 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 30–35 दिन पर छिड़काव करें।
- चना, मटर उवं मसूर में निंदाई 40–45 दिन पर संपन्न कर सिंचाई की व्यवस्था करें।

उद्यानिकी -

- आम, लीची, आंवला के पौधों पर मीलीबग नामक कीट को चढ़ने से रोकने हेतु चिपचिपी पट्टी या ग्रीस पट्टी लगायें। छाल खानेवाली सुंडी के लिए रूई के फाहे में डीजल या डाइक्लोरावॉस कीटनाशक दवा लगाकर छेद में डालें और गीली मिट्टी से छेद बंद कर दें।
- आलू में पिछेती झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर डाइथेन एम–45 दवा का छिड़काव करें। 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें।
- आलू में कंद भूमि से बाहर दिखने लगे तो शीघ्र ही मिट्टी चढ़ा दें। मध्यम समय बाली गोभी की रोपाई करें।
- तरबूज, खरबूज, लौकी, करेला, ककड़ी एवं कद्दू लगाने हेतु खेत की तैयारी करें तथा बीज को पॉलीथिन की थैली में बुवाई करें।
- धनिया, मेथी की फसल पर चूर्णी फफूंद के बचाव हेतु 02 ग्राम/ली. की दर से छिड़काव करें।
- प्याज, लहसुन से सिंचाई तथा निंदाई करें। परपल ब्लाच नामक रोग के नियंत्रण हेतु ब्लाइटाक्स–50 या डाइथन एम–45 नामक फफूंद नाशक दवा का छिड़काव 15 दिन के अंतर पर दो बार करें।

पशुपालन -

- गाय, भैसों में गर्भाधान हेतु उत्तम नस्ल के सांड/भैसों का प्रयोग करें या कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा का लाभ उठायें।
- प्रस्तुत लेखों पर संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ये लेखक के स्वयं के विचार है। – संपादक
- नवजात बछड़ों को 2–3 दिन तक खीस अवश्य पिलायें।
- अंडे देने वाले मुर्गियों को संतुलित आहार खिलायें।

डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक, कृषि प्रसार शिक्षा, विनोद निर्मलकर, वि.व.वि., पौध रोग

केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ से तकनीकी सलाह हेतु संपर्क करें

१. डॉ. राम निवास शर्मा	–	किसानों के अनुभव, नई तकनीकी एवं सफलता की कहानी हेतु।		
	–		कार्या. 07752-255024	मो. 9424152366
२. डॉ. दिनेश कुमार शर्मा	–	प्रचार–प्रसार	कार्या. 07752-255024	मो. 9425544181
३. डॉ. श्रीमती किरण गुप्ता	–	गृह विज्ञान	कार्या. 07752-255024	मो. 7587179665
४. श्रीमती शिल्पा कौशिक	–	फसल उत्पादन	कार्या. 07752-255024	मो. 9770454321
५. श्री देवेन्द्र उपाध्याय	–	उद्यानिकी	कार्या. 07752-255024	मो. 9893304639
६. श्री विनोद कुमार निर्मलकर	–	पौध रोग	कार्या. 07752-255024	मो. 9827481051
७. श्रीमती निवेदिता पाठक	–	गृह विज्ञान	कार्या. 07752-255024	मो. 9229590288
८. श्रीमती सुशीला ओहदार	–	कम्प्यूटर	कार्या. 07752-255024	मो. 8103938739

प्रेषक –
कार्यक्रम समन्वयक,
कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

Chlorfluazuron 5.4% EC

भारत शासन सेवार्थ — बुक पोस्ट

सेवा में,
श्रीमान/डॉ. _____

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें –
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.) 495 001
फोन : 07752–255024 (मो.) 94241–152366

सदस्यता शुल्क 25/– रूपये वार्षिक मात्र